कुंडली मिलान के बाद तलाक

सोलह संस्कारों में विवाह एक महत्वपूर्ण संस्कार है। मनुष्य की दैहिक, मानसिक और सामाजिक आवश्यकता है विवाह। आधुनिक मनोविज्ञान भी इस तथ्य की पुष्टि करता है कि मनुष्य के पूर्ण विकास के लिए जीवन-साथी का होना नितांत आवश्यक है। अनेक सफल व्यक्तियों ने यह स्वीकारा है कि उनकी सफलता में जीवन-साथी का योगदान है। दूसरी ओर विवाह के बाद ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं जब जीवन नरक से भी बदतर हो जाता है अश्चर्य यह है कि यह सब कुंडली मिलान के उपरांत भी होता हैं।

कुंडली मिलान, जिसे गुण मिलान भी कहते है।, जन्म के समय चंद्रमा जिस नक्षत्र में स्थित है उसके आधार पर किया जाता है। यह एक अति सरल और गौण विधि है, जिसे ज्योतिष शास्त्र के सिद्धांतों से अनभिज्ञ व्यक्ति भी दस मिनट से कम समय में सीख सकता है। इस विधि मे सिर्फ वर तथा कन्या के नामाक्षर अथवा जन्म नक्षत्र का एक सारणी से मिलान करके परिणाम एक मिनट में निकाल लिया जाता है। सच पूछें तो इससे अधिक कठिन तो रेलवे समय सारणी देखना है। विवाह जैसे संवेदनशील और अहम विषय का निर्धारण इतने कम समय में कैसे किया जा सकता है? ज्योतिष शास्त्र के प्रवर्तक ये गलती कर ही नहीं सकते यह परंपरा कालांतर में ज्योतिष के गिरते स्तर और पॉकेट बुक्स पढ़कर बने।

भविष्यवक्ताओं की बाढ़ के कारण चलन में आ गई। उत्कृष्ट श्रेणी के ग्रंथों ने गुण मिलान के अलावा भाव तथा ग्रह विश्लेषण का प्रबल समर्थन क्या है। यही कारण है कि 36 मे से 30-32 गुण मिलने वालों में भी तलाक की नौबत आ जाती है और 9 से 12 गुण मिलने वालों की विवाह की सुखद स्वर्ण जंयती देखी गई है।

वास्तव में सफल विवाह के मिलान के लिए कुछ अन्य तथ्य ज्यादा महत्वपूर्ण हैं जिन पर प्रत्येक कोण से विचार किया जाना चाहिए, क्योंकि जल्दबाजी में निर्णय सुना देना किसी के जीवन को अंधकारमय बना सकता है। गुण मिलान से अधिक महत्वपूर्ण वर तथा कन्या के पंचम भाव, पंचमेश , सप्तम भाव, सप्मेश भाग्येश तथा व्ययेश की जांच है। पंचमेश से विद्या, पद और बुद्धि के स्तर का अनुमान लगाया जा सकता है। वर तथा कन्या की बुद्धि का स्तर लगभग समान होना चाहिए। यदि किसी आई.ए.एस. अधिकारी के किसी आठवीं कक्षा पास कन्या से 36 में से 32 गुण मिलते हैं तो सारणी मिलान विधि से तो यह अति श्रेष्ठ मिलान घोषित कर दिया जाएगा, परंतु

सफल वैवाहिक जीवन का मुझे संदेह है क्योंकि दोनों के पंचम भाव तथा भावेश में अंतर की गहरी खाई है। दूसरी ओर यदि एक डॉक्टर लड़के और डॉक्टर लड़की के गुण कम भी मिलतें हैं तो पंचम भाव समान दशमेश की स्थिति के कारण विवाह सिद्ध हो सकता हैं।

धार्मिक प्रवृत्ति का विश्लेषण भी सफल विवाह के लिए आवश्यक है । यदि कन्या धर्मपरायण है और वर विपरित प्रकृति का है तो वैमनस्य उत्पन्न हो सकता है। अत: दोनों के नवम भाव, बृहस्पति ग्रह की स्थिति और बल अवलोकन आवश्यक है। विवाह के उपरांत संतान की कामना स्वाभाविक है। बृहस्पति व पंचमेश संतान के कारण ग्रह हैं। यदि वर का यह पक्ष दुर्बल है तो कन्या का प्रबल होना चाहिए। पति-पत्नि के आपसी रिश्तों की मजबूती के कारक शुक्र तथा व्येयश ग्रह हैं। इस पक्ष का विश्लेषण आज के युग में महत्वपूर्ण है क्योंकि काम प्रवृत्ति में विभिन्नता के कारण असफल यौन संबंध जीवन में विषमता का कारण बन सकते हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि कुंडली या गुण मिलान से अधिक महत्वपूर्ण वर और कन्या के ग्रहों की प्रकृति का विश्लेषण है। इस कार्य में देश, काल, पात्र और परिस्थिति को ध्यान में अवश्य रखा जाना चाहिए। कहते हैं कि जोड़ी विधाता बनाता है तो फिर तलाक क्यों होता हैं? विधाता तो गलती कर ही नही सकता और न ही विधाता इतना क्रूर हो सकता है कि बेमेल जोड़े बनाए। अधिकांश मामलों में त्रुटिपूर्ण मिलान और हमारी लालसा तलाक का कारण बनती है। बहू घर में घूंघट में भी रहे, सास-ससूर की सेवा भी करे और बस में चढ़कर नौकरी भी कर आए, ऐसा शायद संभव नहीं है। यदि ऐसी पत्नी चाहिए जो बस में भागकर चढ़ सके तथा नौकरी भी कर सके तो कन्या की कुंडली का तृतीय और दशम भाव बलवान होना चाहिए। सास-ससुर की सेवा करे, पति को परमेश्वर समझे ऐसा तभी संभव है, जबकन्या का नवम भाव शुभ कर्तरी योग में हो, लग्न पर बलवान वृहस्पति की दृष्टि हो तथा शुक्र क्रुर क्षेत्र में नहीं हो

डॉ. भवानी खण्डेलवाल (विप्र)
2-ए-17, हाऊसिंग बोर्ड़, बांसवाड़ा
फोन : (02962) 250432] मो. 9414101332